अध्याय I

शोध – परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 पर्यावरणीय शिक्षा के उददेश्य

1.1.2 भारत वर्ष में पर्यावरण शिक्षा

1.1.3 विश्वस्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1.3 समस्या का कथन

1.4 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

1.5 उद्देश्य

1.6 परिकल्पनाएँ

1.7 अध्ययन का सीमांकन

अध्याय I

1.1 प्रस्तावना –

'अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता, बृहस्पति र्देवता, रूद्रों देवता, आदित्यः मरूतो देवता, विश्वे देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्र देवता, वरूणो देवता''

प्रकृति के अंगों उपांगो को देवता स्वरूप मानने की परम्परा वैदिक काल से रही है। सूर्य, नदी, पर्वत, आकाश, उषा, वरूण (जल के देवता) आदि को सम्मान देते हुए पूजनीय माना गया है। प्रत्येक प्राणी एवं मनुष्य पर्यावरण का ही एक अंश है। इसके अतिरिक्त वन–वनस्पति, पेड़ पौधे भी मानव अस्तित्व के लिए विशेष सहायक होते हैं। इन सबके सामूहिक सम्मेलन से ही पर्यावरण का सृजन होता है। किन्तु वर्तमान समय में पर्यावरण का निर्माण करने वाले कारकों में स्थापित संलुतन छिन्न–भिन्न हो जाने के कारण पर्यावरण संबंधी चिन्ताजनक संस्थिती उत्पन्न हो गयी है। पर्यावरण संस्थिती के प्रकटन में मनुष्य कि अदूरदर्शिता अविवेक अज्ञानता, अशिक्षा, एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति बहुत हद–तक जिम्मेदार है। यदि उसे समय रहते पर्यावरण से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ इतनी भयावह, दुर्भिक्ष एवं असमाधानित हो जाएगी कि कदाचित प्राणि जगत एवं मानव जगत का अस्तित्व ही समाप्त हो जाय। ऐसी ही विचारधारा को दृष्टि में रखकर पर्यावरण के प्रति चेतना एवं जन–जागृति लाने हेतु पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education) नामक एक अभिनव प्रवृत्ति का अभ्युदय शिक्षावेदों द्वारा किया गया।

पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परिवार और शिक्षा की है। बचपन से बालक अपने निकट के पर्यावरण से

प्रभावित होने लगता है। निरंतर बदलते हुए पर्यावरणीय-हास के प्रति शिव व्याप्त चिंता एवं चेतना के फलस्वरूप यह और भी आवश्यक होता है कि हमारे बालक-बालिकाओं अर्थात् नागरिकों को इस विषय के प्रति सावधान किया जाए तथा पर्यावरण रक्षा व संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए उनमें मूल्यों व मूल्यांकन के प्रति विशिष्ट जागरूकता उत्पन्न की जाये।

पर्यावरण शिक्षा वह ज्ञान प्रदायिनी शाखा है जो पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुचिंतापूर्ण बनाने का मंतव्य देती है। इसका लक्ष्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता का प्रार्दुभाव करना और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनसहभागिता बढ़ाना है। "पर्यावरण अध्ययन" के पर्यायवाची के रूप में पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण उपागम आदि शब्दों के प्रयोग होते हैं। डॉ. लायड बी.सारप के द्वारा पर्यावरण अध्ययन को कैम्पिग एजूकेशन स्कूल कैम्पिंग था आउटडोर एजूकेशन भी कहा गया है।

वेबस्टर (Webster) शब्दकोश के अनुसार "पर्यावरण से तात्पर्य उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है जो सामाजिक और समुदाय के समूह द्वारा व्यक्ति और समुदाय के जीवन को प्रभावित करती है।" पर्यावरणविद फिर्टिग का मानना है। "प्राणियों का परिस्थितिकीय योग नही पर्यावरण है।" हर्सकोविट्स का मानना है "पर्यावरण सम्पूर्ण बाहय परिस्थितियों और उसका जीवनधारियों पर पड़ने वाला प्रभाव है जो जैव जगत के विकास चक्र का नियामक है।"

बेलग्रेड घोषणा पत्र, 1975 (Belgrade charter) के अनुसार, "पर्यावरण को उसके समग्र रूप से देखा- वह चाहे प्राकृतिक हो, मानव जनित हो, पारिस्थितिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो, सामाजिक व वैधानिक हो, सांस्कृतिक हो या सौंदर्य परक हो।"

1.1.1 पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य –

सन् 1977 में तिबलिसी (Tibilisi) में अंतप्रशासनिक कान्फ्रेन्स (Intergovernmental Conference) में जब 'पर्यावरण शिक्षा' का विधिवत् शुभारंभ हुआ तो यह निर्णय लिया गया कि विश्व के सभी देशों के लिए समान और व्यापक रूप से पर्यावरण शिक्षा के ऐसे वस्तुनिष्ठ उद्देश्य निश्चित किए जाने चाहिए, जो अत्यंत व्यावहारिक और पर्यावरण से संबंधित समस्याओं का सामना कर सकते हो :–

1. जागरूकता से संबंधित उद्देश्य (Awareness)–

   व्यक्ति और समाज को सम्पूर्ण पर्यावरण और उससे संबंधित समस्याओं के प्रति चेतना और संवेदनशीलता प्रदान करना।

2. ज्ञान से संबंधित उद्देश्य (Knowledge) –

   व्यक्ति को सम्पूर्ण पर्यावरण और उससे संबंधित समस्याओं की आधारभूत समझ प्रदान करना, उसको दायित्व का भान कराना तथा उसको भूमिका निभाने में सहायता प्रदान करना।

3. अभिवृत्ति से संबंधित उद्देश्य (Attitude)–

   पर्यावरण की गहरी चिंता करने, सामाजिक दायित्व निभाने, पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार करने के लिए प्रेरित करना।

4. कौशल से संबंधित उद्देश्य (Skills) –

   पर्यावरण की समस्याओं को सुलझाने व हल खोजने के कौशल प्रदान करना।

5. मूल्याकंन क्षमता (Evaluation ability)

   पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय तथा शैक्षिक कार्यक्रमों की परिस्थितिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सौंदर्यपरक और

शैक्षिक घटकों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन करने की क्षमता प्रदान करना।

6. सहभागिता से संबंधित उद्देश्य (Participation) –

पर्यावरण समस्याओं का उचित ढंग से हल निकालने के लिए जिम्मेदार और सहभागिता की भावना को विकसित करना।

युनेस्को की रिपोर्ट (1974) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग है न कि विज्ञान की कोई अलग शाखा या अध्ययन हेतु कोई विशिष्ट विषय। इसी के अन्य प्रकाशन 'लिवींग इन द एनवायरमेन्ट–ए सोर्सबुक फॉर एनवायरमेन्ट एजुकेशन' में पर्यावरण शिक्षा के बारे में कहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने भी शिक्षण और पर्यावरण का महत्व माना है और कहा है कि पर्यावरण के प्रति बालक–बालिकाओं में जागरूकता पैदा करना बहुत जरूरी है। संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) में पर्यावरण शिक्षा की महत्ता को प्रकट करते हुए कहा कि– ''पर्यावरण के प्रति जागरूकता बच्चों से लेकर समाज के सभी आयु वर्गो एवं क्षेत्रों में फैलनी चाहिए। इसे शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में समाहित किया जायेगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF-2005) के अनुसार बच्चों को पर्यावरण व पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण सरोकार है। अब यह अधिक अनिवार्य हो गया है कि पर्यावरण का पोषण व संरक्षण किया जाए। इसलिए प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की शिक्षा दी जानी चाहिए। प्राकृतिक अध्ययन में उसके संरक्षण और क्षरण से बचाने की आवश्यकता पर जोर होना चाहिए।

1.1.2 भारत वर्ष में पर्यावरण शिक्षा –

सन् 1985 में 'केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय' ने 'पर्यावरण शिक्षा' के लिए योजना का सूत्रपात किया, जिसकी रचना पर्यावरण और उसकी सुरक्षा के प्रति जनचेतना जागृत करने के लिए की गई। उसी समय से पर्यावरण और वन–मंत्रालय विभिन्न पर्यावरण व वानिकी कार्यक्रमों तथा पर्यावरण शिक्षा के नियोजन, सम्बर्द्धन और क्रियान्वयन की निगरानी के लिए भारत सरकार के प्रशासनिक ढ़ांचों में एक केन्द्रिय बिन्दु के रूप में कार्य कर रहा है। मंत्रालय को देश में 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) तथा अंतर्राष्ट्रीय समन्वित पर्वत विकास केन्द्र (ICIMOD) की केन्द्रीय एजेन्सी के रूप में नामित किया गया है और यह संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं पर्यावरण विकास सम्मेलन (UNCED) की अनुवर्ती कार्यक्रमों पर ध्यान देता है।

भारत सरकार ने 9वीं पंचवर्षीय योजना में 'पर्यावरण शिक्षा' के लिए विशेष बजट का प्रावधान किया है। विद्यालयों में 'पर्यावरण उन्मुख योजना' के लिए 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। राज्यों को योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए शत–प्रतिशत सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने शैक्षिक पाठ्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को अलग से तथा एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने के लिए औपचारिक शिक्षा में सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण पहल की है। मंत्रालय अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा को भी प्रोत्साहन देता है ताकि समाज के सभी वर्गों में जागरूकता या चेतना उत्पन्न करने के लिए प्रयासरत् है। यह गोष्ठियों, कार्यशालाओं (Workshops) प्रशिक्षण कार्यक्रमों श्रव्य–दृश्य कार्यक्रमों आदि का भी

आयोजन करता है। वर्ष 2000 में मंत्रालय ने 'राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान' का आयोजन' किया जिसका विषय था, अपना पर्यावरण स्वच्छ और हरा-भरा रखिए।

मंत्रालय द्वारा पर्यावरण विज्ञान तथा प्रबंध के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में जागरूकता, अनुसंधान और प्रशिक्षण सुविधाओं को मजबूत बनाने के 7 उत्कृष्ट केन्द्र खोले गए है जिसमें पर्यावरण के क्षेत्र में – पर्यावरण शिक्षा केन्द्र अहमदाबाद, सी.पी.आर., पर्यावरण शिक्षा केन्द्र चैन्नई, प्रमुख है।

भारत वर्ष में 'अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम International Environment Education Programme (IEEP)} के सहयोग से नई दिल्ली में सन् 1983 में NCERT और IEEP की संयुक्त, कार्यगोष्ठी 'पर्यावरण शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण' सन् 1985 में संयुक्त 'पर्यावरण शिक्षा की परामर्शी बैठक, सन् 1987 में NCERT और IEEP का एशियाई क्षेत्र के लिए संयुक्त उपक्षेत्रीय सेमिनार, सन् 1989 में पर्यावरण शिक्षा के लिए NCERT और IEEP का संयुक्त 'पर्यावरण शिक्षा के लिए अन्तक्षैत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित होते रहे हैं।

पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेस (1985) आयोजित हुआ, जिसमें इससे पहले आयोजित 'पर्यावरण तथा पर्यावरण शिक्षा' पर अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसो के आधार पर प्रमुख विचार बिंदुओं को समेकित कर अपना प्रतिवदेन प्रस्तुत किया जिसे 'पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली घोषणा-पत्र' कहते हैं।

वर्ष 1993 में दिल्ली में 'ग्लोबल फोरम फॉर एनवायरमेण्टल एजूकेशन (Global Forum for Environmental Education) का सेमिनार

आयोजित हुआ, जिसमें युनेस्को के 'पर्यावरण शिक्षा प्रभाग' के प्रमुख डॉ. अब्दुल गफूर गजनवी ने कहा कि, आज आवश्यकता पर्यावरण शिक्षा की राष्ट्रीय योजना और ब्यूह रचना के विकास की है। मनुष्य पर्यावरण का एक अभिन्न अंग है तथा पर्यावरण परिवर्तन का प्रमुख कारक भी। पर्यावरण और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू है। पर्यावरण शिक्षा पर राजनैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता है।

1.1.3 विश्वस्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता–

सन् 1972 में स्टाकहोम (स्वीडन) में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, मानव पर्यावरण' में सम्पूर्ण विश्व का ध्यान निरंतर गति से नष्ट होते पर्यावरण की ओर आकर्षित किया गया। इस सम्मेलन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु, "प्राकृतिक सम्पदाओं के निरंतर विनाश और औद्योगीकरण से उत्पन्न प्रदूषण द्वारा मानव के जीवन स्तर तथा उत्तरजीविका को खतरा" था। इस सम्मेलन में 'बहुमूल्य पर्यावरण' को सुरक्षित रखने के उपायो पर बल दिया गया तथा उपाय ढूढ़ने का भी प्रयास किया गया।

संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के फलस्वरूप "संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम" (United nations Environment programme, UNEP) की स्थापना हुई। इसी क्रम में 'पर्यावरण और विकास' पर 'विश्व आयोग' (World commition, 1983) को नियुक्त किया गया। इस आयोग को ब्रण्डलैंड रिपोर्ट भी कहते है। इस आयोग ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे दीर्घकालीन विकास की निति बनाई जाए जिसमें आर्थिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण संबंधी प्रकरणों को समाकलित किया जाय।

ब्राजील के रिओडिजेनिरो (Rio Dejaneiro) में सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन पर्यावरण और विकास पर आयोजित हुआ। जिसे 'अर्थ समिट (Earth summit, 92) कहते हैं। इस सम्मेलन में पृथ्वी के भविष्य पर गहरी चिंता व्यक्त की गई तथा इस अधिवेशन के फलस्वरूप एक वृहद् दीर्घकालीन विकास प्रारंभ करने का प्रस्ताव अजेण्डा 21 पारित हुआ। सन् 1995 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन ने 'ग्लोबलवार्मिग' को नियंत्रित करने की दृष्टि से 'अमीर देशों को अपनी तकनीकी गरीब और विकासशील देशों को प्रदान करने का आग्रह किया।

संयुक्त राष्ट्र ने अपने पर्यावरण से संबंधित प्रशिक्षण और पर्यावरण बोध संबंधी कार्यक्रमों का पुनर्मूल्यांकन प्रारंभ किया तथा विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों शिक्षा में पर्यावरण और विकास कार्यक्रमों को समाकलित करने पर बल दिया।

विश्वस्तर पर 1977 आयोजित इन्टर गवर्नमेंटल कार्फ्रेंस में पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य निम्न प्रकार निर्धारित किए गए :-

1. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा परिस्थितिक अन्तनिर्भता का ज्ञान तथा तत्संबंधी जागरूकता का प्रसार करना।
2. प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण तथा उसके विकास संबंधी ज्ञान मूल्य, अभिवृत्ति, प्रतिबद्धता तथा कुशलता अर्जित करने के अवसर प्रदान करना।
3. पर्यावरण के संदर्भ में अन्तवैयाक्तिक, सामुहिक तथा सामाजिक स्तर पर नवीन व्यावहारिक चेतना का सृजन करना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

पर्यावरण शिक्षा अथवा पर्यावरण अध्ययन एक नया अधिगम क्षेत्र है। यह विषय अपनी विकासवस्था में है। संभवतः इस कारण इसका अधिगम क्षेत्र अभी तक पूरी तरह से निश्चित नहीं हो पाया।

वस्तुतः 'पर्यावरण अध्ययन' को तीन अर्थो में प्रयुक्त किया जाता है– पर्यावरण के लिए अध्ययन, पर्यावरण के बारे में अध्ययन, पर्यावरण के माध्यम से अध्ययन प्रथम अर्थ में इसका संबंध सामाजिक समस्याओं से दूसरे अर्थ में इसका संबंध विषय–वस्तु से तथा तीसरे अर्थ में पर्यावरण का संबंध इसे शिक्षण–साधन के रूप में प्रयुक्त करने से है। ऐसी आशा की जाती है कि पर्यावरण अध्ययन से शिक्षार्थी में ऐसे विचारों, मूल्यों, रूपों तथा कुशलताओं का विकास होगा तो अन्य परिवेशों को समझने में सहायक होगा। पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परिवार शिक्षा और शिक्षक की है।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्राचीन काल से ही इसी कारण शिक्षक को आदरपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। वर्तमान समय में पर्यावरण को दूषित करने वाली प्रवृत्ति पर अंकुश शिक्षक ही लगा सकते हैं। वे लोगों में पर्यावरणीय चेतना का विकास कर सकते हैं। यदि शिक्षक में पर्यावरण से संबंधित कौशल, अभिवृत्ति एवं मूल्यों का विकास होगा तभी वे जनसामान्य में पर्यावणीय चेतना विकसित कर सकते हैं, शिक्षकों को स्वयं तद्संबंधी मूल्यों में पारंगत होना चाहिए।

पर्यावरण के प्रति चेतना या जागरूकता का विकास करने के लिए समाज के विभिन्न लोगों का सहयोग आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण हेतु

चेतना का विकास करने हेतु पढ़े-लिखे लोगों तथा निरक्षर दोनों को संवेदनशील बनाना शिक्षक का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। पर्यावरणीय चेतना और संवेदनशीलता में बड़ा घनिष्ठ संबंध है। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होने से ही विद्यार्थियों में पर्यावरण जागृति या चेतना आ सकती है, अर्थात् वे पर्यावरण को किस रूप में समझते है तथा पर्यावरण के प्रति कितना सचेत है, पर्यावरण के प्रति उनकी क्या धारणा एवं दृष्टिकोण है? पर्यावरण के सही अर्थ को समझने वाला विद्यार्थी या व्यक्ति पर्यावरण प्रदूषण पर आत्मघाती निति नहीं अपना सकता है। अतः जब तक पर्यावरण के प्रति मानसिक अनुभूति विकसित नहीं होगी, तब तक पर्यावरण चेतना जागृत नहीं हो सकती है।

अतः पर्यावरण चेतना विकसित करने हेतु शिक्षक का यह दायित्व है कि वह विद्यार्थी तथा लोगों को मानसिक रूप से तैयार करें। यदि शिक्षक पर्यावरण प्रति जागरूक होगें तब ही विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आ सकती है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता तथा विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन है।

1.3 समस्या कथन –

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता तथा विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन।

1.4 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा–

पर्यावरण जागरूकता –

ब्लुम ने (1956) जागरूकता को बोधात्मक एवं ग्रहणात्मक का प्रथम सोपान बताया है। यहाँ अधिगमकर्ता किसी एक तत्व या उद्दिपक

के अस्तित्व से संवेदनशील रहता है। ज्ञान की तरह यह सिर्फ प्रायाभरण से ही संबंधित नहीं हैं ब्लुम ने बताया है कि अवसर मिलने पर अधिगमकर्ता भी घटना के बारे में चेतना पाता है।

परन्तु इस अध्ययन में पर्यावरण जागरूकता की व्याख्या सीमा धवन के पर्यावरण जागरूकता परीक्षण की सहायता से की गई है इसके अनुसार जिसके प्राप्तांक (Score) ज्यादा है। उसको पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक कहा गया है। जिसके प्राप्तांक कम है उसकी पर्यावरण जागरूकता कम है।

पर्यावरण जागरूकता संबंधी कार्यक्रम –

पर्यावरण के घटक (Elements) को पहचानना, पर्यावरण के संदर्भ में जानकारी प्रस्तुत करना, पर्यावरण अपघटन के लिए प्रतिबंध तथा योजना बनाना। पर्यावरण संबंधित नये ज्ञान को जानना आदि उद्देश्य पूर्ति के लिए जो कार्यक्रम विद्यालयों में आयोजित किये जाते हैं। उसे पर्यावरण जागरूकता संबंधित कार्यक्रम कहते हैं।

1.5 उद्देश्य –

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
3. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

4. विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

5. सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

6. विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभमि अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

7. 0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष तथा 20 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

8. प्राथमिक विद्यालयों में होनेवाले पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

1.6 परिकल्पनाएँ–

1. ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. 0-10 वर्ष, 10-20 वर्ष, तथा 20 से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.7 सीमांकन –

1. प्रस्तुत अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले तक सीमित है।
2. इस अध्ययन में शासकीय, प्राथमिक विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।
3. इस अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों के मात्र 100 अध्यापकों का चयन किया है। जिनमें 50 अध्यापक ग्रामीण क्षेत्र से तथा 50 अध्यापक शहरी क्षेत्र से है।
4. इस अध्ययन में अध्यापक एवं अध्यापिका दोनों का ही चयन किया है।